हफ़्तावार रिसाला : 264
Weekly Booklet : 264

Khaufe Khuda Mein Rone Ki Fazilat (Hindi)

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की किताब "नेकी की दा'वत" की
एक क़िस्त मअ तरमीम व इज़ाफ़ा बनाम

ख़ौफ़े ख़ुदा में रोने की फ़ज़ीलत

सफ़हात 24

एक मील तक सीने की गड़गड़ाहट 03
आटा छिड़कने की अनोखी वसिय्यत 11
एक क़तूरए आंसू और आग के कई समुन्दर 14
कलेजा हिला देने वाली एक सच्ची दास्तान 20

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हुज़ूरे अल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دار الفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **ख़ौफ़े ख़ुदा में रोने की फ़ज़ीलत**
सिने त़बाअ़त : **1444** हि., **2022** ई.
ता'दाद : 000
नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है ।

ख़ौफ़े ख़ुदा में रोने की फ़ज़ीलत

येह रिसाला **(ख़ौफ़े ख़ुदा में रोने की फ़ज़ीलत)** शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई मेल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद 1, गुजरात

MO. 98987 32611 • Email : hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

येह मज़्मून "नेकी की दा'वत" सफ़ह़ा 272 ता 290 से लिया गया है।

ख़ौफ़े ख़ुदा में रोने की फ़ज़ीलत

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 22 सफ़ह़ात का रिसाला : "**ख़ौफ़े ख़ुदा में रोने की फ़ज़ीलत**" पढ़ या सुन ले, उस को अपने ख़ौफ़ से इख़्लास के साथ रोने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा और उस को बे ह़िसाब बख़्श दे। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नमाज़ के बा'द ह़म्दो सना व दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले से फ़रमाया "दुआ मांग क़बूल की जाएगी, सुवाल कर, दिया जाएगा।" (نسائی ص220، حدیث:1281)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ख़ौफ़े ख़ुदा और इ़श्क़े मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में **रोना** एक अ़ज़ीमुश्शान "नेकी" है, इस लिये ह़ुसूले सवाब की निय्यत से इस नेकी की तरग़ीब पर मब्नी नेकी की दा'वत पेश करते हुए रोने के फ़ज़ाइल बयान किये जाते हैं। काश ! कहीं हम भी सन्जीदगी अपनाने और ख़ौफ़े ख़ुदा व इ़श्क़े मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में आंसू बहाने वाले बनें।

रोने वाली आंखें मांगो रोना सब का काम नहीं ज़िक्रे मह़ब्बत आ़म है लेकिन सोज़े मह़ब्बत आ़म नहीं

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

रोने वालों के सदक़े न रोने वालों की बख़्शिश

सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त, सीखने सिखाने के मदनी ह़ल्क़ों और महाफ़िले ना'त की भी क्या बात है ! कोशिश कर के अज़ इब्तिदा ता इन्तिहा इन में शिर्कत करनी चाहिये, न जाने कब किसी का दिल चोट खा जाए, उस पर रिक़्क़त त़ारी हो और इख़्लासे क़ल्बी के साथ उस की आंखें छलक पड़ें और उस को रह़मत अपनी आग़ोश में ले ले और उस मुख़्लिस बन्दे के इख़्लास की बरकत से वहां मौजूद हर मुसल्मान की मग़्फ़िरत कर दी जाए। इज्तिमाए़ ख़ैर में रोने वाले की बरकत से अहले मग़्फ़िरत की कसरत का इस ह़दीसे मुबारका से अन्दाज़ा लगाइये। चुनान्चे एक मर्तबा सरवरे कौनैन, नानाए ह़सनैन صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ख़ुत्बा दिया तो ह़ाज़िरीन में से एक शख़्स रो पड़ा। येह देख कर आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अगर आज तुम्हारे दरमियान वोह तमाम मोमिन मौजूद होते जिन के गुनाह पहाड़ों के बराबर हैं तो उन्हें इस एक शख़्स के रोने की वज्ह से बख़्श दिया जाता क्यूं कि फ़िरिश्ते भी इस के साथ रो रहे थे और दुआ़ कर रहे थे : اَللّٰهُمَّ شَفِّعِ الْبَكَّائِيْنَ فِيْمَنْ لَّمْ يَبْكِ या'नी ऐ **अल्लाह** पाक ! न रोने वालों के ह़क़ में रोने वालों की शफ़ाअ़त क़बूल फ़रमा। (شعب الایمان، 1/494، حدیث:810)

ह़ज़रते मौलाना रूम رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं :

ہر کُجا آبِ رَواں غُنچہ بُوَد ہر کُجا اشکِ رَواں رَحمت بُوَد

(जब आस्मान से बारिश बरसती है तो ज़मीन पर गुन्चे और गुल खिलते हैं और जब ख़ौफ़े ख़ुदा से किसी के आंसू जारी होते हैं तो रह़मत के फूल खिलते हैं)

मख्खी के सर बराबर आंसू

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : जिस मोमिन की आंखों से **अल्लाह** पाक के ख़ौफ़ से आंसू निकलते हैं अगर्चे मख्खी के सर के बराबर

हों, फिर वोह आंसू उस के चेहरे के ज़ाहिरी हिस्से को पहुंचें तो **अल्लाह** पाक उसे जहन्नम पर ह़राम कर देता है। (شعب الایمان، 1/491،حدیث:802)

क़ल्बे मुज़्तर चश्मे तर सोज़े जिगर सीना तपां ता़लिबे आहो फ़ुग़ां जाने जहां ! अ़त्तार है

(वसाइले बख़्शिश, स. 222)

एक मील तक सीने की गड़ गड़ाहट की आवाज़ सुनाई देती !

हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज़रते इब्राहीम **ख़लीलुल्लाह** عَلَيْهِ السَّلَام जब नमाज़ के लिये खड़े होते तो **ख़ौफ़े ख़ुदा** के सबब इस क़दर गिर्या व ज़ारी फ़रमाते (या'नी रोते) कि एक मील के फ़ासिले से उन के सीने में होने वाली गड़ गड़ाहट की आवाज़ सुनाई देती। (احیاء العلوم،4/224)

जी चाहता है फूट के रोऊं तेरे डर से
अल्लाह ! मगर दिल से क़सावत[1] नहीं जाती

सरकारे मदीना के बा'द किस का रुत्बा है ?

سُبْحٰنَ الله ! जिस का मर्तबा **अल्लाह** पाक की जनाब में जितना बड़ा होता है वोह उसी क़दर ज़ियादा ख़ौफ़े ख़ुदा का ह़ामिल होता है जैसा कि अभी आप ने ह़ज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام के गिर्या व ज़ारी का ह़ाल सुना। आप عَلَيْهِ السَّلَام के अ़ज़ीमुश्शान रुत्बे की भी क्या बात है! जी हां, हमारे मक्की मदनी आक़ा मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द सारी मख़्लूक़ात में आप عَلَيْهِ السَّلَام ही अफ़्ज़ल हैं! चुनान्चे फ़क़ीहे

1 ...या'नी सख़्ती

मिल्लत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती जलालुद्दीन अमजदी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अपनी सुवाल जवाब पर मब्नी किताब "इस्लामी ता'लीम" सफ़ह़ा 194 ता 195 पर फ़रमाते हैं : "हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द सब से बड़े मर्तबे वाले ह़ज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام हैं। फिर ह़ज़रते मूसा कलीमुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام फिर ह़ज़रते ईसा रूहुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام और (फिर) ह़ज़रते नूह़ नजिय्युल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام, इन ह़ज़रात को मुरसलीने ऊलुल अ़ज़्म कहा जाता है।" (इस्लामी ता'लीम, स. 195, ब तग़य्युर)

शजर व ह़जर भी रोने लगते

दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की किताब, "**ख़ौफ़े ख़ुदा**" (160 सफ़ह़ात) सफ़ह़ा 45 पर है : ह़ज़रते यह़या عَلَيْهِ السَّلَام जब नमाज़ के लिये खड़े होते तो (ख़ौफ़े ख़ुदा से) इस क़दर रोते कि दरख़्त और मिट्टी के ढेले भी साथ रोने लगते ह़त्ता कि आप عَلَيْهِ السَّلَام के वालिदे मोह़तरम ह़ज़रते ज़करिय्या عَلَيْهِ السَّلَام भी देख कर रोने लगते यहां तक कि बेहोश हो जाते। मुसल्सल बहने वाले आंसूओं के सबब ह़ज़रते यह़या عَلَيْهِ السَّلَام के रुख़्सारे मुबारक (या'नी बा बरकत गालों) पर ज़ख़्म हो गए थे। वालिदा माजिदा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا आप عَلَيْهِ السَّلَام के पाकीज़ा रुख़्सारों पर पश्मीने (या'नी ऊन) की पट्टियां चिपटा देती थीं। जब भी आप عَلَيْهِ السَّلَام नमाज़ के लिये खड़े होते तो रोना शुरूअ़ कर देते, जिस के नतीजे में वोह ऊनी पट्टियां भीग जातीं। वालिदए मोह़तरमा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهَا उन्हें ख़ुश्क करने के लिये जब निचोड़तीं और आप عَلَيْهِ السَّلَام अपनी आंखों से निकलने वाले पानी को अपनी मां के बाज़ू पर गिरता हुवा देखते तो बारगाहे इलाही में इस त़रह़ अ़र्ज़ करते : "ऐ **अल्लाह** पाक! येह मेरे आंसू हैं, येह मेरी

मां है और मैं तेरा बन्दा हूं जब कि तू اَرْحَمُ الرّٰحِمِیْن या'नी सब से ज़ियादा रह्म फ़रमाने वाला है।" (احیاء العلوم،4/225)

शराबे महब्बत कुछ ऐसी पिला दे   कभी भी नशा हो न कम या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 81)

जन्नत व जहन्नम के दरमियान घाटी है

नबी इब्ने नबी, ह़ज़रते यह़्या عَلَیْہِ السَّلَام एक मर्तबा कहीं खो गए। आप عَلَیْہِ السَّلَام के वालिदे मोह़तरम ह़ज़रते ज़करिय्या عَلَیْہِ السَّلَام तीन दिन तक तलाशते रहे, आख़िरे कार एक मक़ाम पर इस ह़ाल में नज़र आए कि एक खुदी हुई क़ब्र में खड़े रो रहे हैं। फ़रमाया : ऐ मेरे लाल ! मैं तीन दिन से ढूंड रहा हूं और तुम यहां क़ब्र में खड़े आंसू बहा रहे हो ? अ़र्ज़ की : बाबाजान ! क्या आप عَلَیْہِ السَّلَام ने मुझे नहीं बताया था कि जन्नत और दोज़ख़ के दरमियान एक घाटी है जिसे वोही तै कर सकता है जो बहुत रोने वाला हो, तो आप عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया : मेरे बेटे ! रोओ और येह फ़रमा कर ख़ुद भी उन के साथ मिल कर रोने लगे।

(شعب الایمان،1/493،حدیث:809)

सरफ़राज़ और सुर्ख़ रू मौला   मुझ को तू रोज़े आख़िरत फ़रमा

(वसाइले बख़्शिश, स. 113)

आंसू के हर क़त़रे से एक फ़िरिश्ते की पैदाइश

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : **अल्लाह** करीम के कुछ फ़िरिश्ते ऐसे हैं जिन के पहलू उस (करीम) के ख़ौफ़ से लरज़ते रहते हैं, उन की आंख से गिरने वाले हर आंसू के क़त़रे से एक फ़िरिश्ता पैदा होता है, जो खड़े

हो कर अपने रब की पाकी बयान करना शुरूअ़ कर देता है।

(شعب الایمان، 1/521، حدیث:914)

तेरे ख़ौफ़ से तेरे डर से हमेशा मैं थरथर रहूं कांपता या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 78)

रोने वाला हरगिज़ जहन्नम में दाख़िल नहीं होगा

अल्लाह पाक के सच्चे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "ख़ौफ़े ख़ुदा से रोने वाला हरगिज़ **जहन्नम** में दख़िल नहीं होगा ह़त्ता कि दूध थन में वापस आ जाए।" (شعب الایمان، 1/490، حدیث:800) मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी जैसे दोहे हुए दूध का थन में वापस होना ना मुम्किन है ऐसे ही उस शख़्स का दोज़ख़ में जाना ना मुम्किन है। जैसे रब तआ़ला फ़रमाता है : ﴿حَتّٰى يَلِجَ الْجَمَلُ فِيْ سَمِّ الْخِيَاطِ﴾ (پ8، الاعراف:40) **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** जब तक सूई के नाके ऊंट न दाख़िल हो। ख़ौफ़े ख़ुदा में रोने के बड़े फ़ज़ाइल हैं **अल्लाह** पाक नसीब फ़रमा दे।

(मिरआतुल मनाजीह़, 5/436)

क़ल्बे मुज़्तर की लाज रख मौला येह सदा मेरी चश्मे नम की है

(वसाइले बख़्शिश, स. 125)

ख़ौफ़े ख़ुदा से रोने वाला बख़्श दिया जाएगा

ह़ज़रते अनस رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से मरवी है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शादे ख़ुश गवार है : जो शख़्स **अल्लाह** पाक के ख़ौफ़ से रोए, **अल्लाह** पाक उस की बख़्शिश फ़रमा देगा। (ابن عدی، 5/396)

सोज़िशे सीना व जिगर दे दे आरज़ू मुझ को चश्मे नम की है

(वसाइले बख़्शिश, स. 125)

अगर आप नजात चाहते हैं तो.....

ह़ज़रते उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! नजात क्या है ? फ़रमाया : ﴿1﴾ अपनी ज़बान को रोक रखो (या'नी अपनी ज़बान वहां खोलो जहां फ़ाएदा हो, नुक़्सान न हो) और ﴿2﴾ तुम्हारा घर तुम्हें किफ़ायत करे (या'नी बिला ज़रूरत घर से न निकलो) और ﴿3﴾ गुनाहों पर रोना इख़्तियार करो। (ترمذی،4/182،حدیث:2414)

लाइक़े नार हैं मेरे आ'माल इल्तिजा या ख़ुदा करम की है

(वसाइले बख़्शिश, स. 125)

मूसलाधार बारिश शुरूअ़ हो गई

ख़ौफ़े ख़ुदा और इ़श्क़े मुस्त़फ़ा में रोना मुक़द्दर वालों का ह़िस्सा है, रोने की सआ़दत पाने के लिये रोने वालों की सोह़बत निहायत मुफ़ीद होती है। आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल में आप को ब कसरत रोने वाले मिलेंगे। आप भी आ़शिक़ाने रसूल की सोह़बत इख़्तियार कीजिये इन के साथ मदनी क़ाफ़िलों के मुसाफ़िर बनिये, अगर रोना नहीं आता था तो आप को भी اِنْ شَآءَاللّٰہ रोना आ जाएगा। आप की तरग़ीब के लिये एक मदनी बहार पेश की जाती है चुनान्चे सुन्नतों भरा एक मदनी क़ाफ़िला 12 दिन के लिये एक गांव पहुंचा। येह अ़लाक़ा कई सालों से बरसात की बरकात से मह़रूम था, और इस सबब से लोग बहुत परेशान थे। नमाज़ के बा'द लोगों ने मदनी क़ाफ़िले वालों से बारिश की दुआ़ के लिये कहा, आ़शिक़ाने रसूल ने हाथ उठा दिये, सारे नमाज़ी भी दुआ़ में शामिल थे, अभी दुआ़ जारी थी कि एक दम काले काले बादल उमंड आए, रह़मत की घन्घोर घटा छा गई

और देखते ही देखते मूसला धार बारिश शुरूअ़ हो गई जब कि कुछ देर क़ब्ल मत्लअ़ बिल्कुल साफ़ था और सूरज पूरी आबो ताब से चमक रहा था। सारे गांवं में मदनी क़ाफ़िले की इस बरकत की धूम मच गई। वहां के उ़लमा व अइम्माए किराम ने इस बरसने वाली बारिश को दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िले वाले आ़शिक़ाने रसूल की दुआ़ का समर (या'नी नतीजा) क़रार दिया।

ख़ूब हों बारिशें, दूर हों ख़ारिशें क़ह़त के दिन टलें, क़ाफ़िले में चलो
बरसे बरसात जब, बाग़ो गुलज़ार सब लह लहाने लगें, क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

बरसात के पानी से बीमारियों का इलाज

سُبْحٰنَ اللہ ! मदनी क़ाफ़िले की भी क्या ख़ूब बरकतें हैं ! वाक़ेई बारिश भी **अल्लाह** पाक की ने'मत है, क़ुरआने पाक पारह 26 **सूरए** قٓ आयत 9 में बारिश को "مَّآءً مُّبٰرَكًا" **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** "बरकत वाला पानी" कहा गया है।

दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की किताब, **"राहे ख़ुदा में ख़र्च करने के फ़ज़ाइल"** (40 सफ़ह़ात) सफ़ह़ा 30 पर है **:** ह़ज़रते मौला अ़ली رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने एक बार फ़रमाया **:** जब तुम में से कोई शख़्स शिफ़ा चाहे तो क़ुरआने अ़ज़ीम की कोई आयत रिकाबी में लिखे और बारिश के पानी से धोए और अपनी औ़रत से उस के महर में से एक दिरहम उस की ख़ुशी से ले उस का शहद ख़रीद कर पिये कि बेशक **शिफ़ा** है। (مواہب لدنیہ، 3/48, फ़तावा रज़विय्या, जि. 23, स. 155) एक त़बीब

का कहना है : मैं ने कई मरीज़ों को मुख़्तलिफ़ अमराज़ में शहद और बारिश का पानी दिया है इसे दीगर नुस्ख़ों से बढ़ कर नफ़्अ़ बख़्श पाया है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

ख़ौफ़े ख़ुदा से रोना सुन्नत है

हज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से मरवी है कि जब येह आयते मुबारका नाज़िल हुई :

اَفَمِنْ هٰذَا الْحَدِیْثِ تَعْجَبُوْنَ ۙ﴿۵۹﴾ وَ تَضْحَكُوْنَ وَ لَا تَبْكُوْنَ ۙ﴿۶۰﴾

(پ27، النجم:59،60)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तो क्या इस बात से तुम तअ़ज्जुब करते हो, और हंसते हो और रोते नहीं।

तो अस्हाबे सुफ़्फ़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم इस क़दर रोए कि उन के मुबारक रुख़्सार (या'नी पाकीज़ा गाल) आंसूओं से तर हो गए। उन्हें रोता देख कर रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भी रोने लगे। आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के बहते हुए आंसू देख कर वोह साह़िबान और भी ज़ियादा रोने लगे। फिर आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : वोह शख़्स जहन्नम में दाख़िल नहीं होगा जो **अल्लाह** पाक के डर से रोया हो। (شعب الایمان، 1/489، حدیث:798)

अल्लाह ! क्या जहन्नम अब भी न सर्द होगा ? रो रो के मुस्त़फ़ा ने दरिया बहा दिये हैं

(ह़दाइक़े बख़्शिश शरीफ़ स.102)

शर्ह़े कलामे रज़ा : इस शे'र में मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ख़ुदाए ग़फ़्फ़ार के दरबारे गुहर बार में अ़र्ज़ गुज़ार हैं : **या अल्लाह** पाक ! क्या जहन्नम की आग ग़ुलामाने मुस्त़फ़ा के ह़क़ में अब भी सर्द न होगी ! मेरे प्यारे प्यारे परवर दगार ! तेरे प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी उम्मत की बख़्शिश के लिये दुआएं करते हुए इतना रोए हैं इतना रोए हैं गोया रो रो कर दरिया बहा दिये हैं।

ख़ुदाए ग़फ़्फ़ार बख़्श दे अब तू लाजे महबूब रख ही ले अब
हमारा ग़म ख़्वार फ़िक्रे उम्मत में देख आंसू बहा रहा है

(वसाइले बख़्शिश, स. 459)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

रोने जैसी सूरत बना ले

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने फ़रमाया : "जो शख़्स **रो** सकता हो तो रोए और अगर रोना न आता हो तो रोने जैसी सूरत बना ले।" (احیاء العلوم، 4/201)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन अच्छों की नक़्ल भी अच्छी होती है : दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की किताब, "फ़ज़ाइले दुआ़" (318 सफ़ह़ात) सफ़ह़ा 81 पर दुआ़ की क़बूलिय्यत के आदाब में अदब नम्बर 33 है : (दुआ़ के दौरान) "आंसू टपक्ने में कोशिश करे अगर्चे एक ही क़त़रा हो कि दलीले इजाबत (या'नी क़बूलिय्यत की दलील) है। रोना न आए तो रोने का सा मुंह बनाए कि नेकों की सूरत भी नेक (या'नी अच्छी) है।" दुआ़ के बयान कर्दा अदब की शर्ह़ में आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : येह (रोनी) सूरत बनाना ब निय्यते तशब्बोह (या'नी रोने वालों की नक़्क़ाली) **अल्लाह** पाक के हुज़ूर (या'नी बारगाहे इलाही में) है न कि औरों के दिखाने को कि वोह (या'नी लोगों को दिखाने के लिये करना) रिया है और ह़राम, येह नुक्ता याद रहे।

नदामत से गुनाहों का इज़ाला कुछ तो हो जाता मुझे रोना भी तो आता नहीं हाए नदामत से

(वसाइले बख़्शिश, स. 238)

सर और दाढ़ी में आटा छिड़क्ने की अनोखी वसिय्यत

अच्छों की नक़्क़ाली के ज़िम्न में "मा'दने अख़्लाक़" हिस्सए अव्वल सफ़्हा 54 पर दी हुई एक दिलचस्प हिकायत कुछ तब्दीली के साथ अ़र्ज़ करता हूं : एक मस्ख़रे ने मरते वक़्त अपने दोस्त को वसिय्यत की, कि जब मुझे दफ़्न करने लगो तो मेरी दाढ़ी और सर के बालों में "आटा छिड़क देना" दोस्त ने कहा : यार ! तुम ज़िन्दगी में तो मज़ाक़ मस्ख़री करते रहे हो अब आख़िरी वक़्त में तो इस से बाज़ रहो ! उस ने कहा : अगर तुम वाक़ेई मेरे ख़ैर ख़्वाह हो तो मैं जो कहता हूं वोह कर देना। दोस्त हंस कर राज़ी हो गया और इन्तिक़ाल के बा'द उस ने दफ़्न करते वक़्त उस की दाढ़ी और सर के बालों पर आटा छिड़क दिया। चन्द रोज़ बा'द अपने मर्हूम दोस्त को ख़्वाब में देख कर पूछा : مَا فَعَلَ اللهُ بِكَ ? या'नी **अल्लाह** पाक ने तुम्हारे साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? मर्हूम बोला : मुझ से सुवाल हुवा, तुम ने आटा छिड़क्ने की वसिय्यत क्यूं की थी ? मैं ने अ़र्ज़ की : **या अल्लाह** पाक मैं ने तेरे मह़बूब **मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का इर्शाद सुना था : اِنَّ اللهَ يَسْتَحْيِ عَنْ ذِى الشَّيْبَةِ الْمُسْلِم (معجم اوسط، 4/82، حدیث:5286) (या'नी बिला शुबा **अल्लाह** पाक मुसल्मान के बुढ़ापे से ह़या फ़रमाता है) बूढ़ा होना मेरे इख़्तियार में न था इस लिये सोचा कि लाओ "बुढ़ापे की सूरत" ही बना लूं। तो **अल्लाह** पाक ने फ़रमाया : जाओ ! मैं ने तुझे बख़्श दिया।

رحمتِ حق بہا، نہ مے جُوید رحمتِ حق بہانہ مے جُوید

(**अल्लाह** की रह़मत क़ीमत नहीं मांगती। **अल्लाह** की रह़मत बहाना चाहती है)

सफ़ेद बाल क़ियामत में नूर होंगे

आज कल उ़मूमन सिन रसीदा इस्लामी भाई सफ़ेद बालों से कतराते हैं ह़ालां कि मुसल्मान होने की ह़ालत में बुढ़ापे की वज्ह से सफ़ेद बाल आना बड़ी सआ़दत की बात है चुनान्चे **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : सफ़ेद बालों को न उखाड़ो क्यूं कि येह क़ियामत के दिन नूर होंगे। जिस का एक बाल सफ़ेद हुवा **अल्लाह** पाक उस के लिये एक नेकी लिखेगा और उस का एक गुनाह मुआ़फ़ फ़रमाएगा और उस का एक दरजा बुलन्द फ़रमाएगा। (الترغیب والترہیب، 3/86، حدیث:6)

आंसू न पोंछने की फ़ज़ीलत

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काएनात, अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने फ़रमाया : "जब तुम में से किसी को ख़ौफ़े ख़ुदा से रोना आए तो वोह आंसूओं को कपड़े से साफ़ न करे बल्कि रुख़्सारों पर बह जाने दे कि वोह इसी ह़ालत में रब करीम की बारगाह में ह़ाज़िर होगा।" (شعب الایمان، 1/493، حدیث:808)

रोता हुवा मैं आऊं दाग़े जिगर दिखाऊं अफ़्साना भी सुनाऊं मैं अपनी बे कसी का

(वसाइले बख़्शिश, स. 194)

घर में छुप कर रोना अच्छा है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ख़ौफ़े ख़ुदा और इ़श्क़े मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में बहने वाले आंसू बेशक नहीं पोंछने चाहिएं मगर दूसरों की मौजूदगी में रोते हुए येह ग़ौर कर लेना ज़रूरी है कि न पोंछने से मक़्सूद कहीं येह तो नहीं कि लोग मेरे आंसू देख लें ताकि मुझ से मुतअस्सिर हों कि वाह ! वाह ! बहुत नेक आदमी या बड़ा आ़शिक़े रसूल है ! अगर

مَعَاذَاللّٰه ऐसा है तो येह रियाकारी है अब आंसू न पोंछने की फ़ज़ीलत कैसी ! उलटा जहन्नम की ह़क़दारी है। जिस को सब के सामने रोने में "रियाकारी" का अन्देशा हो उसे चाहिये कि दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की किताब, "**अख़्लाक़ुस्सालिह़ीन**" (सफ़ह़ात 74) सफ़ह़ा 30 पर दी हुई इस ह़िकायत को पेशे नज़र रखे चुनान्चे ह़ज़रते अबू उमामा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ ने एक शख़्स को देखा कि वोह सज्दे में रो रहा है, फ़रमाया : نِعْمَ هٰذَا لَوْكَانَ فِي بَيْتِكَ حَيْثُ لَا يَرَاكَ النَّاس या'नी येह (रोना) अच्छा काम है अगर घर में होता, जहां लोग न देखते। (تنبیہ المغترین، ص32)

मेरे चेहरे पर कफ़न ढक दीजिये साथियो रुस्वा मुझे मत कीजिये
बढ़ते जाते हैं गुनह अ़त्तार आह ! कुछ तो इज़्हारे नदामत कीजिये

(वसाइले बख़्शिश, स. 219)

आंसूओं को दाढ़ी से साफ़ करते

ह़ज़रते मुह़म्मद बिन मुन्कदिर رَحْمَةُ اللّٰہِ عَلَیْہ जब रोते तो अपने चेहरे और दाढ़ी पर आंसू मल लेते और फ़रमाते कि मुझे मा'लूम हुवा है कि आग उस जगह को न छूएगी जहां ख़ौफ़े ख़ुदा से निकलने वाले आंसू लगे हों। (احیاء العلوم،4/201) **अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِين بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيِّيْن صلى الله عليه واله وسلم

या ख़ुदा बहरे रज़ा अ़त्तार को वोह आंख दे हो ग़मे मह़बूब में आंसू बहाना जिस का काम

(वसाइले बख़्शिश, स. 154)

रोना न आए तो ब कोशिश रोएं

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने फ़रमाया : "रोया करो ! अगर रोना न आए तो रोने की कोशिश करो, उस ज़ात की

क़सम जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी जान है ! अगर तुम में से किसी को इ़ल्म होता तो वोह इस क़दर चीख़ता कि उस की आवाज़ फट जाती और इस त़रह़ नमाज़ पढ़ता कि उस की पीठ टूट जाती ।'' (الزہد لابن المبارک، ص356، رقم:1007) येह नक़्ल करने के बा'द हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه एह़याउल उ़लूम जिल्द 4 सफ़ह़ा 230 पर फ़रमाते हैं : गोया उन्हों ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की इस ह़दीसे मुबारक की त़रफ़ इशारा किया जिस में आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अगर तुम वोह बात जानते जो मैं जानता हूं तो तुम हंसते कम और रोते ज़ियादा ।'' (بخاری، 4/243، حدیث:6485)

सोज़िशे इ़श्क़ में जलता ही रहूं मैं हर दम आंख से ग़म में तेरे ख़ून बरसता देखूं

(वसाइले बख़्शिश, स. 121)

अल्लाह पाक एक क़त़रए आंसू से आग के कई समुन्दर बुझा देगा

ह़ज़रते अबू सुलैमान दारानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : (ख़ौफ़े ख़ुदा के बाइ़स) जो आंखें डब डबाएंगी (या'नी आंसूओं से भर जाएंगी), उस चेहरे पर क़ियामत के दिन सियाही और ज़िल्लत नहीं चढ़ेगी और अगर उन डब डबाने वाली आंखों से आंसू जारी हो जाएंगे तो **अल्लाह** उन आंसूओं के पहले क़त़रे के साथ ही आग के कई समुन्दर बुझा देगा और जिस क़ौम में से कोई शख़्स (ख़ौफ़े ख़ुदा से) रोता है, उस क़ौम पर रह़्म किया जाता है । (احیاء العلوم، 4/201)

आग दोज़ख़ की जला ही नहीं सकती उन को इ़श्क़ की आग में दिल जिन के जला करते हैं

(वसाइले बख़्शिश, स. 143)

एक हज़ार दीनार सदक़ा करने से बेहतर एक क़तरए अश्क

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا ने फ़रमाया : "**अल्लाह** पाक के ख़ौफ़ से आंसू का एक क़तरा बहना मेरे नज़्दीक एक हज़ार दीनार सदक़ा करने से बेहतर है।" (شعب الایمان، 1/502، حدیث:842)

दुर्रे नायाब बिलाशक हैं वोह हीरे अनमोल अश्क आक़ा की जो यादों में बहा करते हैं

(वसाइले बख़्शिश, स. 143)

ज़मीन पर गिरने वाले आंसू के क़तरे की फ़ज़ीलत

हज़रते का'बुल अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہ ने फ़रमाया : ख़ौफ़े ख़ुदा से आंसू बहाना मुझे अपने वज़्न के बराबर सोना सदक़ा करने से भी ज़ियादा पसन्दीदा है क्यूं कि जो शख़्स **अल्लाह** पाक के डर से रोए और उस के आंसूओं का एक क़तरा भी ज़मीन पर गिर जाए तो आग उस (रोने वाले) को न छूएगी। (درۃ الناصحین، ص253)

या रब बचा ले तू मुझे नारे जह़ीम से औलाद पे भी बल्कि जहन्नम ह़राम हो

(वसाइले बख़्शिश, स. 189)

ख़ौफ़े ख़ुदा से निकले हुए आंसू का क़तरा हूर ने चेहरे पर मल लिया

हज़रते अह़मद बिन अबुल ह़वारी رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : मैं ने ख़्वाब में एक हूर को देखा जिस के चेहरे पर नूर की चमक थी मैं ने पूछा : तुम्हारे चेहरे की येह चमक दमक किस वज्ह से है ? वोह बोली : तुम्हें वोह रात याद है जिस में तुम रोए थे ? मैं ने कहा : हां। उस ने कहा : तुम्हारे आंसू मुझे ला कर दिये गए तो मैं ने उन को अपने चेहरे पर मल लिया चुनान्चे मेरे चेहरे की येह चमक दमक आप के उसी आंसू की वज्ह से है।

(رسالہ قشیریہ، ص422) **अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो ।** اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

गुनाह के बा वुजूद ख़ुश रहना जहन्नम में गिरा सकता है !

एक इबादत गुज़ार का क़ौल है : अगर कोई शख़्स गुनाह करे और हंसे तो यक़ीन जानो कि **अल्लाह** पाक उस बेबाक को जहन्नम में डाल देगा और वहां वोह रोएगा और अगर कोई शख़्स त़ाअ़त व बन्दगी बजा लाए फिर भी ख़ौफ़े ख़ुदा के बाइस रोए तो बिल यक़ीन **अल्लाह** पाक उसे जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा और वोह वहां ख़ुशी से रहेगा ।

(المنبہات علی الاستعداد لیوم المعاد، ص5 ملخصا)

उ़म्र बदियों में सारी गुज़ारी हाए फिर भी नहीं शर्मसारी
बख़्श महबूब का वासित़ा है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है

(वसाइले बख़्शिश, स. 134)

बेबाकी से गुनाह करना बहुत सख़्त बात है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! यूं तो हर गुनाह बुरा और जहन्नम में ले जाने वाला काम है मगर हंस हंस कर और बेबाकी (या'नी बे ख़ौफ़ी) के साथ गुनाह करना येह बहुत ज़ियादा तबाह कुन होता है, बे धड़क गुनाह कर डालने वालों को **अल्लाह** पाक के क़हरो ग़ज़ब से डर जाना चाहिये, ख़ुदा की क़सम ! जहन्नम की गरमी कोई बरदाश्त नहीं कर सकेगा । **अल्लाह** पाक पारह 10 **सूरतुत्तौबह** की आयत नम्बर 81 ता 82 में जहन्नम की ह़ालत के बारे में इर्शाद फ़रमाता है :

قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ اَشَدُّ حَرًّا ؕ لَوْ كَانُوْا يَفْقَهُوْنَ ﴿۸۱﴾ فَلْيَضْحَكُوْا قَلِيْلًا وَّلْيَبْكُوْا كَثِيْرًا ۚ

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ जहन्नम की आग सब से सख़्त गर्म है किसी त़रह़ उन्हें समझ होती तो उन्हें चाहिये कि थोड़ा हंसें और बहुत रोएं ।

..... तो थोड़ा हंसते और ज़ियादा रोते

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه मज़्कूरा आयाते करीमा के तह़्त फ़रमाते हैं : दुन्या में ख़ुश होना और हंसना चाहे कितनी ही दराज़ मुद्दत के लिये हो मगर वोह आख़िरत के रोने के मुक़ाबिल थोड़ा है क्यूं कि दुन्या फ़ानी (या'नी फ़ना होने वाली) है और आख़िरत दाइम (या'नी हमेशा रहने वाली) है और बाक़ी है। या'नी आख़िरत का रोना दुन्या में हंसने और ख़बीस अ़मल (या'नी गुनाह) करने का बदला है। ह़दीस शरीफ़ में है : सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि अगर तुम जानते वोह जो मैं जानता हूं तो थोड़ा हंसते और बहुत रोते। (بخاری،4/243،حدیث:6485)

मेरे अश्क बहते रहें काश ! हर दम तेरे ख़ौफ़ से या ख़ुदा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 78)

ऐ हंस हंस कर गुनाह करने वालो !

ऐ हंस हंस कर गुनाह करने वाले नादानो ! इस से क़ब्ल कि मौत तुम्हारी ग़फ़्लत भरी हंसी का ख़ातिमा कर दे सच्ची तौबा कर लो ! ख़ुद को डराने, सन्जीदा बनाने और जहन्नम में रोते हुए जाने से बचाने के लिये इस रिवायत पर ग़ौर करो ! जिस में ह़ुज़ूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया है : ऐ लोगो ! रोया करो और अगर न हो सके तो रोने की कोशिश किया करो क्यूं कि जहन्नम में जहन्नमी रोएंगे यहां तक कि उन के आंसू उन के चेहरों पर ऐसे बहेंगे गोया वोह नालियां हैं, जब आंसू ख़त्म हो जाएंगे तो ख़ून बहने लगेगा और आंखें ज़ख़्मी हो जाएंगी कि उन में अगर कश्तियां डाली जाएं तो चलने लगें। (شرح السنۃ للبغوی،7/565، حدیث:4314) ह़कीमुल उम्मत

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : या'नी जीते जी अपने गुनाहों के डर, रब के ख़ौफ़, उस की रह़मत के शौक़, उस के ह़बीब (صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) के इ़श्क़ में जितना हो सके रो लो ऐसे रोने का अन्जाम اِنْ شَآءَاللّٰه ख़ुशी व शादमानी है। (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 7/545)

मुझ ख़ताकार पर भी अ़ता कर बे ह़िसाब बख़्श दे रब्बे अक्बर
मुझ को दोज़ख़ से डर लग रहा है या ख़ुदा तुझ से मेरी दुआ़ है

(वसाइले बख़्शिश, स. 132)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ की चोट ने कहां से कहां पहुंचा दिया !

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! शैत़ान को भगाने, सोई हुई क़िस्मत जगाने, ख़ौफ़े ख़ुदा में रोने का जज़्बा बढ़ाने सच्ची तौबा की सआ़दत पाने, ग़मे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में आंसू बहाने और अपना सीना मदीना बनाने के लिये आ़शिक़ाने रसूल की दीनी त़हरीक, दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल से हर दम वाबस्ता रहिये, अपने ईमान की ह़िफ़ाज़त के लिये कुढ़ते रहिये, नमाज़ों की पाबन्दी जारी रखिये, सुन्नतों पर अ़मल करते रहिये, नेक आ'माल के रिसाले के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारिये और इस पर इस्तिक़ामत पाने के लिये हर रोज़ "जाएज़ा" कर के नेक आ'माल का रिसाला पुर करते रहिये और हर माह की पहली तारीख़ को अपने यहां के दा'वते इस्लामी के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवा दीजिये और अपने इस दीनी मक़्सद "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है" के ह़ुसूल की ख़ात़िर पाबन्दी से हर माह कम अज़ कम तीन दिन के मदनी क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल के हमराह सुन्नतों भरा

सफ़र कीजिये। आइये ! आप की तरग़ीब व तह़रीस के लिये आप को एक मदनी बहार सुनाऊं : एक इस्लामी भाई के बयान का ख़ुलासा है : اَلْحَمْدُلِلّٰه मैं ने जब पहली बार (1426 हि. ब मुत़ाबिक़ 2005 ई.) में आ़शिकाने रसूल की दीनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत की तो दीनी माह़ोल से वाबस्ता हो गया और इस क़दर जज़्बा मिला कि मदनी काफ़िले से आ कर दा'वते इस्लामी के जामिअ़तुल मदीना में दर्से निज़ामी के अन्दर दाख़िला ले लिया और येह बयान देते वक़्त اَلْحَمْدُلِلّٰه दौरए ह़दीस कर रहा हूं। मेरा एक दोस्त पहले दीनी माह़ोल में था मगर वोह शराबी दोस्तों की सोह़बत के सबब ख़राब हो गया और مَعَاذَاللّٰه नमाज़ पढ़नी भी छोड़ दी। मुझे इस का बहुत क़लक़ (या'नी दुख) था। मैं जब भी अपने गांव जाता उस पर इन्फ़िरादी कोशिश करता, वोह सुनी अनसुनी कर देता, मगर मैं ने हिम्मत न हारी।

اَلْحَمْدُلِلّٰه मैं ने (1427 हि. ब मुत़ाबिक़ 2006 ई.) में फिर उस को सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ की दा'वत पेश की। इज्तिमाअ़ आया और गुज़र गया मेरी उन से मुलाक़ात न हो सकी। ईद के दिन मैं ने अपने घर में से झांका तो एक हलकी सी दाढ़ी वाले बा इमामा इस्लामी भाई दूर से हमारे घर की त़रफ़ बढ़े चले आ रहे थे, मैं उन को पहचान न सका, जब वोह क़रीब आए तो मैं ख़ुशी से उछल पड़ा क्यूं कि येह तो मेरे वोही बिछड़े हुए दोस्त थे, मैं ने दौड़ कर जोशे मह़ब्बत में उन को सीने से चिमटा लिया। और दीनी माह़ोल में वापसी पर मुबारक बाद पेश की। जब इस मदनी इन्क़िलाब का सबब दरयाफ़्त किया तो कहने लगे : आप की दा'वत पर सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में ह़ाज़िर हुवा था, वहां इख़्तिताम

रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ में मेरे दिल पर मदनी चोट लग गई, दुआ़ में ख़ौफ़े ख़ुदा के सबब रोना धोना मचा हुवा था, मेरे ज़मीर ने मुझे झंझोड़ा कि देख तो सही ! नेक परहेज़ गार आ़शिक़ाने रसूल तो गुनाहों से तौबा करते हुए अपने परवर दगार के दरबार में गिड़गिड़ा रहे और आंसू बहा रहे हैं जब कि तू तो यक़ीनी तौ़र पर सर ता पा गुनाहों में घिरा हुवा है मगर तुझे इस का कोई एह़सास नहीं ! बस भाई ! मेरा भी बन्द टूटा, मैं भी ख़ूब रोया और रो रो कर मैं ने अपने साबिक़ा गुनाहों से तौबा की और उसी वक़्त दाढ़ी शरीफ़ बढ़ाने और इ़मामए पाक सजाने की पक्की निय्यत कर ली । اَلْحَمْدُ لِلّٰه उन्हों ने पुरजोश अन्दाज़ में "दा'वते इस्लामी" के दीनी कामों की धूमें मचानी शुरूअ़ कर दीं । मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना ह़ाज़िर हो कर मदनी क़ाफ़िला कोर्स करने की भी सआ़दत ह़ासिल की और तरक़्क़ी करते करते आठ नव माह में दा'वते इस्लामी की ज़ैली मुशावरत के निगरान बन गए ।

बुरी सोह़बतों से कनारा कशी कर के अच्छों के पास आ के पा मदनी माह़ोल
तनज़्ज़ुल के गहरे गढ़े में थे उन की तरक़्क़ी का बाइ़स बना मदनी माह़ोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 604)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

कलेजा हिला देने वाली एक सच्ची दास्तान

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस मदनी बहार से हमें येह दर्स मिला कि बिल ख़ुसूस अपने जानने पहचानने वालों की बद आ'मालियों पर दिल जलाते रहना और उन पर इन्फ़िरादी कोशिश का सिल्सिला जारी रखना चाहिये कि न जाने कब किसी का दिल चोट खा जाए ! नीज़ येह भी दर्स मिला कि बुरी सोह़बत से हमेशा बच कर रहना चाहिये कि येह

अच्छे भले नेक इन्सान को भी शैतान के क़दमों में ला पटख़्ती है। येह तो उन इस्लामी भाई की ख़ुश नसीबी कि अपने हमदर्द इस्लामी भाई की कुढ़न और इन्फ़िरादी कोशिश के सदक़े शराबियों की सोह़बतों से बच निकलने में काम्याब हो गए, वरना बुरी सोह़बत और बिल ख़ुसूस शराबियों और जूआरियों की संगत ऐसा तबाह करती है कि तबाही भी लरज़ उठती है ! जूआरियों की सोह़बत के भयानक अन्जाम की एक सच्ची दास्तान सुनाता हूं, कलेजा थाम कर सुनिये और बुरी सोह़बत से हमेशा हमेशा के लिये तौबा कीजिये चुनान्चे एक मह़ल्ले में एक अ़जीबो ग़रीब बदबू मह़सूस होने लगी, अ़लाक़े वालों की ख़ूब जुस्तजू के बा'द कहीं जा कर बदबू का सुराग़ मिला, वोह बदबू एक बन्द घर से आ रही थी। चुनान्चे पोलीस को इत्तिलाअ़ दी गई। जब पोलीस वाले लोगों की मौजूदगी में ताला तोड़ कर घर के अन्दर दाख़िल हुए तो येह देख कर सब के रूंगटे खड़े हो गए कि वहां चारपाई पर एक जवान आदमी की लाश पड़ी थी और उस के बा'ज़ ह़िस्से गल सड़ चुके थे और उन में कीड़े रेंग रहे थे। येह मन्ज़र देख कर बच्चों समेत कई अफ़राद बेहोश हो गए। तह़क़ीक़ करने पर पता चला कि येह नौ जवान मेह़नत मज़दूरी करने के लिये इस अ़लाक़े में आया था, किराए के मकान में रिहाइश पज़ीर था और बा'ज़ जूआरियों से इस की दोस्ती थी। एक दिन येह नौ जवान अपने दोस्तों से जूआ में बहुत सारी रक़म जीत गया, हारे हुए जूआरी दोस्तों ने हारी हुई रक़म लूटने के लिये इस के गले में फन्दा कसा और बिजली के करन्ट लगा लगा कर मौत के घाट उतार दिया, फिर इसे बे गोरो कफ़न छोड़ कर ताला लगा कर फ़िरार हो गए।

ऐ जूआरी तू जूए से बाज़ आ वरना फंस जाएगा जिस दिन तू मरा
तू नशे से बाज़ आ मत पी शराब दो जहां हो जाएंगे वरना ख़राब
हो गया तुझ से ख़ुदा नाराज़ अगर क़ब्र सुन ले आग से जाएगी भर

(वसाइले बख़्शिश, स. 668, 669)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

फ़ेहरिस

ख़ौफ़े ख़ुदा में रोने की फ़ज़ीलत.....1
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत.....1
रोने वालों के सदक़े न
रोने वालों की बख़्शिश.....2
मख्ख़ी के सर बराबर आंसू.....2
एक मील तक सीने की गड़ गड़ाहट की
आवाज़ सुनाई देती !.....3
सरकारे मदीना के बा'द किस का रुत्बा है ?..3
शजर व ह़जर भी रोने लगते.....4
जन्नत व जहन्नम के दरमियान घाटी है..5
आंसू के हर क़त़रे से एक फ़िरिश्ते की पैदाइश.5
रोने वाला हरगिज़ जहन्नम में
दाख़िल नहीं होगा.....6
ख़ौफ़े ख़ुदा से रोने वाला बख़्श दिया जाएगा.6
अगर आप नजात चाहते हैं तो.....7
मूसलाधार बारिश शुरूअ़ हो गई.....7
बरसात के पानी से बीमारियों का इलाज..8
ख़ौफ़े ख़ुदा से रोना सुन्नत है.....9
रोने जैसी सूरत बना ले.....10
सर और दाढ़ी में आटा छिड़क्ने की अनोखी वसिय्यत.11
सफ़ेद बाल क़ियामत में नूर होंगे.....12
आंसू न पोंछने की फ़ज़ीलत.....12
घर में छुप कर रोना अच्छा है.....12
आंसूओं को दाढ़ी से साफ़ करते.....13
रोना न आए तो ब कोशिश रोएं.....13
एक क़त़रए आंसू आग के
कई समुन्दर बुझा देगा.....14
एक हज़ार दीनार सदक़ा करने से
बेहतर एक क़त़रए अश्क.....15
ज़मीन पर गिरने वाले आंसू के क़त़रे
की फ़ज़ीलत.....15
आंसू का क़त़रा ह़ूर ने चेहरे पर मल लिया..15
गुनाह के बा वुजूद ख़ुश रहना जहन्नम में
गिरा सकता है !.....16
बेबाकी से गुनाह करना बहुत सख़्त बात है...16
तो थोड़ा हंसते और ज़ियादा रोते.....17
ऐ हंस हंस कर गुनाह करने वालो !....17
रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ की चोट ने
कहां से कहां पहुंचा दिया !.....18
कलेजा हिला देने वाली एक सच्ची दास्तान.20

ख़ौफ़े ख़ुदा से रोने वाला बख़्श दिया जाएगा

हज़रते अनस رضی اللہ عنہ से मरवी है कि सरकारे मदीना صلی اللہ علیہ وسلم का इर्शादे ख़ुश गवार है : जो शख़्स **अल्लाह** पाक के ख़ौफ़ से रोए, **अल्लाह** पाक उस की बख़्शिश फ़रमा देगा।

(ابن عدی، 5/396)